

मेरे प्राण जीवन रघुराई मिथिला छोड़ि न जाना ।  
सुन जाने की बात तुम्हारी होते हैं व्याकुल प्राणा ॥  
भरि नैन नीर मैया कहे सुनो श्री रघुरैया  
तेरे दरस बिना लालन घर लग हैं बन समाना ॥  
सिय प्राण सम मैं पाली मणि नाग ज्यों सम्भाली  
कैसे जियूंगी उस बिन जब करोगे अवध पयाना ॥  
नित खेलो आंगन आइ हिलि मिल के चारों भाइ  
निज धाम जानि रघुवर मिथिला को भी अपनाना ॥  
भए धन्य भाग मेरे लहे सुत समान तेरे  
फूली पुण्य बेलि मेरी लगे फल तू राम सुजाना ॥  
कुछ दिन यहां वसोजी खेलो सदां हंसो जी  
नित लाड़ हम लड़ाएं सुख सिंधु में नहाना ॥  
तेरी माय कौशल्या राणी प्रेम मूरति सुखनि खानी  
पालेगी मेरी कुअंरि को करके दुलार नाना ॥  
तो भी अवध गमन हेतु हूं व्याकुल धर्म सेतु  
बिन नीर मछुली जैसे नहिं तैसे तड़फड़ना ॥

पहिराऊं बहु जतन से भूषण जड़ित रतन से  
सुख साज सब सजाकर भोजन खिलाऊं नाना ॥  
मन विमन हो न पावे सारी सरहज गा सुनावे  
मैं रैन दिन हसाऊं खोलि खुशियों के खजाना ॥  
करि सहस विधि सों सेवा खिलाऊं मिथिला मधुर मेवा  
आम केला लीची सुन्दर श्री रंग को भोग लगाना ॥  
बिन देखे लालन तेरे नहि माने प्राण मेरे  
मैगसि की मान विनती करो जनकपुर में थाना ॥